फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 233 1/- नवम्बर 2007

विज्ञान मण्डी-मुद्रा का वाहक वाहन है। मण्डी को, रुपये-पैसों को दफन करने की एक राह विज्ञान की आलोचना से आरम्भ होती है।

शिशुओं की दुलत्तियाँ

बच्चों की बजर से प्रगति और विकास मुर्दाबाद

● शिशु के सहज, स्वस्थ पालन-पोषण में साझेदारी वाले अलग-अलग आयु के पचास लोग आवश्यक हैं। अफ्रीका में प्रचलित एक कहावत अच्छे बचपन के लिये और अधिक लोगों के होने को जरूरी बताती है।

प्रगति और विकास के संग शिशु से लगाव रखते लोगों का दायरा सिकुड़ता जाता है। माता, पिता और बच्चा/बच्ची अब सामान्य बन गया है। मात्र माँ और शिशु प्रगति के शिखरों पर विचरने लगे हैं। एक-दो-तीन का होना माँ का पगलाना, पिता का पगलाना, शिशु में बम के बीज बोना लिये है।

● लगाव के बिना शिशु के संग रहते लोगों को भुगतना विगत में महलों में जन्म लेने वालों की त्रासदी थी। शिशु की देखभाल करने को मजबूर लोगों का स्वाभाविक अनमनापन, दिखावा, बेगानापन राजकुमार-राजकुमारी के टेढे-निष्ठुर-निर्मम-क्रूर व्यवहार का खाद-पानी था।

पति-पत्नी-बच्चे को सामाजिक इकाई बनाने के संग प्रगति और विकास पति के अलावा पत्नी द्वारा नौकरी करने की अनिवार्यता को बढाते हैं। नौकरी करती महिला द्वारा शिशु की देखभाल पैसों के लिये यह काम करने वालों को सौंपना मजबूरी है। बच्चों-युवाओं में टेढेपन-निष्ठुरता-निर्ममता-क्रूरता की उठती लहरें प्रगति का एक परिणाम हैं।

● घड़ी प्रगति और विकास का एक प्रतीक है। समय का अभाव तरक्की का पैमाना है – जितना कम समय आपके पास है उतनी ही अधिक प्रगति आपने की है, आप बेरोजगार हैं तो गर्त में हैं। विकास में सफलता और "क्वालिटी टाइम" एक-दूसरे के पूरक हैं। शिशु को समय नहीं दे पाने के अपराधबोध से ग्रस्त माता-पिता उसे "क्वालिटी टाइम" देते हैं..... "क्वालिटी टाइम" माता-पिता का कवच है और जाने-अनजाने में बच्चे को टेढेपन में दीक्षित करता है।

● स्वाभाविक को नकारना-छिपाना-बाँधना प्रगति-विकास-सभ्यता के प्रतिबिम्ब हैं। "छी-छी नँगू", "टट्टी-पेशाब गन्दे" के फिकरे सामान्य बन गये हैं। प्रगति और विकास शिशु को कपड़ों में लपेटना और टट्टी-पेशाब के लिये समय व स्थान निर्धारित करना लिये हैं। यह पहलेपहल माता-पिता की कुछ मजबूरी है और फिर क्रेच-विद्यालय का अनुशासन। टट्टी-पेशाब रोकना बच्चों को तन के अनेक रोग देता है। छी-छी की बातें मन के रोग लिये हैं।

● पक्के मकान, बिजली, इलेक्ट्रोनिक उपकरण, कुर्सी-मेज प्रगति-विकास-सभ्यता की देन हैं। शिशु के लिये ऐसे निवास यातनागृह हैं।

कच्चे घर में शिशु को चूल्हे की आग से बचाने पर ही विशेष ध्यान जरूरी होता है। पक्के घर में शिशु का हर कदम टोका-टोकी लिये है। चोट का डर, बिजली का भय, महँगी चीज तोड़ने की आशंका माता-पिता को चौकस-चिन्तित रखती हैं। टोका-टोकी शिशु में आक्रोश पैदा करती है और शिशु के क्रोध की अभिव्यक्ति पर रोक को सभ्यता ने एक अनिवार्यता बना दिया है... शिशु मन में यह बम के बीज बोना है। किराये के एक कमरे में रहने अथवा बड़े मकान में रहने से इसमें कोई खास फर्क नहीं पड़ता।

वैसे, आज के देव, प्रभु विज्ञान के अनुसार भी सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट वाले निवास तथा कार्यस्थल अत्यन्त हानिकारक हैं। यह इंग्लैण्ड के साठ प्रतिशत निवासियों की साँस की तकलीफों का प्रमुख कारण हैं।

● गति, तीव्र गति प्रगति और विकास का एक अन्य प्रतीक है। सड़क और वाहन सर्वग्रासी बने हैं। यातनागृह बने निवासों में बच्चों को बन्दी बना कर रखने का बाहरी कारण वाहन हैं, तेज रफ्तार वाहन। गये वह दिन जब साइकिल की रफ्तार को खतरनाक माना जाता था ....

"बाहर" अब बच्चों के दायरे से बाहर है। सड़क पर बच्चों को कैसे खेलने दें .... अन्य सार्वजनिक स्थान हैं नहीं अथवा अनेक शर्तें लिये हैं। ऐसे में बच्चे मनोरंजन के लिये टी वी देखें..

सभ्यता के संग आई पहलवानी, मुक्केबाजी, नाटक, नौटंकी की प्रायोजित पीड़ा-प्रायोजित आनन्द में इधर बहुत प्रगति हुई है। टी वी ने प्रायोजित पीड़ा-प्रायोजित आनन्द को जन-जन तक पहुँचा दिया है। प्रगति-विकास ने एकाकी भोग को, तन की बजाय मस्तिष्क द्वारा भोग को महामारी बना दिया है। आत्मघाती बम बनना, 10-12 वर्ष के बच्चों द्वारा विद्यालय में 18-20 को गोली मारना इसके लक्षण हैं।

●शिशुओं का माटी-रेत-गारा के प्रति आकर्षण देखते ही बनता है। बड़ों की रेत-मिट्टी-कीचड़ से नफरत चिन्ता के संग चिन्तन की बात है....

बच्चों के अच्छे भविष्य के नाम पर अपनी दुर्गत करने, बच्चों की दुर्गत करने पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।■

सत्य की ओर

एक दिन में 8 घण्टे काम। तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं। उत्पादन कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये मजदूर नहीं रखना। यह कानून हैं।

दिल्ली, नोएडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में 12 घण्टे प्रतिदिन काम करवाना सामान्य है। दिन में 16 घण्टे काम, 36 घण्टे लगातार काम करवाना अजूबा नहीं है। एक महीने में ही 120-150 घण्टे ओवर टाइम सामान्य है। प्रतिमाह 200-250 घण्टे ओवर टाइम अजूबा नहीं है। उत्पादन कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों की बड़ी सँख्या सामान्य है। फैक्ट्री में उत्पादन कार्य करते मजदूरों में नब्बे प्रतिशत का ठेकेदारों के जरिये रखे गये होना अजूबा नहीं है।

कथनी और करनी का इतना बेमेल होना साहबों को कुछ ज्यादा ही झूठ बुलवा रहा है। सत्य की ओर थोड़ा सरकने के लिये कानून बदलने के बारे में 5.11.2007 के "हिन्दुस्तान" का समाचार : *"गुड़गाँव और उसके आस-पास के इलाकों में अपने यहाँ काम करने वाले हजारों श्रमिकों की नौकरी से छुट्टी करने को मजबूर हुये वस्त्र निर्यातकों को आर्थिक संकट से उबारने के लिये राज्य सरकार ने उन्हें कुछ तोहफे देने का फैसला किया है।*

"सरकार टैक्सटाइल, हैंडीक्राफ्ट और फुटवियर क्षेत्रों में भी कॉन्ट्रैक्ट लेबर सिस्टम को मंजूरी देने का मन बना रही है। फिलहाल इन क्षेत्रों में सिक्योरिटी, कैंटीन और बागवानी सेवाओं के लिये कॉन्ट्रैक्ट लेबर रखने की मंजूरी है। नियमित कर्मचारी की तुलना में कॉन्ट्रैक्ट लेबर काफी सस्ते पड़ते हैं.... इसके अलावा, एक अन्य प्रस्ताव पर भी विचार हो रहा है, जिसके तहत उत्पादकता आधारित पारिश्रमिक और दो घण्टे के स्वैच्छिक ओवर टाइम का प्रावधान है। इस प्रस्ताव पर एक माह के भीतर अमल किये जाने की सम्भावना है।....." ■

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

गुडईयर टायर मजदूर : "ठेकेदार के जरिये रखे 8 मालियों की तनखा 2400 रुपये। मेन्टेनैन्स का काम करते **आर्मी** और **प्रोजेक्ट इंजिनियर्स** नाम के ठेकेदारों के जरिये रखे 80 मजदूरों को जुलाई व अगस्त की तनखा 3510 रुपये दी। आठ घण्टे के 135 रुपये और साप्ताहिक अवकाश के दिन सिंगल रेट से ओवर टाइम। लेकिन सितम्बर में 8 घण्टे के 117 रुपये कर 30 दिन के 3510 रुपये दिये हैं।"

विक्टोरा टूल इंजिनियर्स वरकर : "प्लॉट 46 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 11 अक्टूबर को फिर एक मजदूर का हाथ कटा.... दो उँगलियाँ गई, बल्लभगढ में भाटिया नर्सिंग होम ले गये, आज 16 अक्टूबर तक एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी है। **मारुति कार** के पुर्जे बनाती विक्टोरा टूल्स हाथ काटू फैक्ट्री है। पावर प्रेस विभाग के 2-3 बन्दे हर समय मेडिकल पर रहते हैं। अधिकतर हाथ कटों को नौकरी से निकाल देते हैं फिर भी पावर प्रेस विभाग में ही 70 मजदूरों में 25 के हाथ कटे हैं। कभी जाँच के लिये कोई अधिकारी आता है तब हाथ कटों को प्लॉट 118 वाली कम्पनी की दूसरी फैक्ट्री में भेज देते हैं।

"विक्टोरा में कोहनी से हाथ कटे मजदूर को ठीक होने पर फैक्ट्री में गार्ड बनाया और महीने बाद निकाल दिया। अभी पहुँचे से हाथ कटे दो मजदूर गेट पर काम करते हैं। दो उँगली कटे राकेश को ठीक होने पर फिर पावर प्रेस पर लगाया। तनखा 2700 रुपये की बजाय जुलाई से देय 3510-4160 न्यूनतम अनुसार माँगने पर 10 सितम्बर को राकेश को नौकरी से निकाल दिया। अरुण का हाथ दूसरी बार कटा तब ई. एस.आई. करवाई.... फोर्क लिफ्ट चलाते दोनों ड्राइवरों की तीन-तीन उँगली कटी हैं। फैक्ट्री में रोज सुबह 8 बजे प्रार्थना, फिर 5 मिनट व्यायाम, फिर साहबों के भाषण.... ज्यादा उत्पादन वाले का नाम, ताली, 100 रुपये इनाम। इधर तीन-चार महीने से सफाई बहुत है, दफ्तर चमका रखा है, मजदूरों को टोपी-चश्मा-लम्बा कोट..... विक्टोरा की 7 गाड़ियाँ मारुति फैक्ट्रियों को पुर्जे पहुँचाने फरीदाबाद-गुड़गाँव दौड़ती रहती हैं।"

स्टर्लिंग टूल्स मजदूर : "डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और कैजुअल वरकरों को सिंगल रेट से भी कम, 14 रुपये प्रति घण्टा। कैजुअलों में आई टी आई किये सी एन सी ऑपरेटरों को भी अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम 3510 रुपये देते हैं।"

एवन वरकर : "प्लॉट 42 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ के लिये 8 घण्टे को 10 घण्टे बना रखा है। दिन हो चाहे रात, रोज 10 घण्टे ड्युटी करो। दो घण्टे को कम्पनी ओवर टाइम मानती ही नहीं। पौने दस घण्टे ड्युटी करने के बाद फैक्ट्री से चले गये तो तनखा से एक घण्टे के पैसे काट लिये जाते हैं। मजदूरों में हैल्परों और कारीगरों को 26 दिन की बजाय 30 दिन के 3510 व 3640 रुपये देते हैं।"

अल्पाइन एपरेल्स मजदूर : "प्लॉट 19 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में छोटे कार्ड वालों की तनखा 3510 रुपये और बड़े कार्ड वालों को 10 घण्टे रोज काम पर महीने के 3510 रुपये। सरकारी अधिकारियों के फैक्ट्री आने की सूचना होती है तो उस दिन बड़े कार्ड वाले मजदूरों को ड्युटी आने से मना कर देते हैं। अचानक अधिकारियों के आने पर बड़े कार्ड वाले मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर निकाल देते हैं। बड़े कार्ड वालों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

प्रिमियर इण्डो प्लास्ट वरकर : "प्लॉट 41 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फिनिशिंग विभाग में 30 महिला मजदूरों की तनखा 1800-2000 रुपये। पुरुष हैल्परों की तनखा 2000 और ऑपरेटरों की 2000-2600 रुपये।"

एम एच टैक्सटाइल्स मजदूर : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 300 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में रंगाई व छपाई का काम करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. मात्र 10 के। हैल्परों को 12 घण्टे के 90 रुपये। कारीगरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3000-3500 रुपये।"

हिन्दुस्तान सिरिंज वरकर : " प्लॉट 178 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम का भारी बोझ और 8 घण्टे खड़े-खड़े काम करना तो है ही, बी-शिफ्ट वालों के संग रोज कोई ना कोई लफड़ा रहता है। रात सवा बारह फैक्ट्री से निकलते हैं और लौटते समय कभी किसी से पैसे छीने जाते हैं तो कभी साइकिल। सीकरी अपने निवास लौट रहे एक मजदूर की सितम्बर-अन्त में लूटपाट में हत्या हुई। इसे एक्सीडेन्ट में मृत्यु कहा गया और कम्पनी ने नये नियमों की सूची टाँग दी: साइकिल के पीछे लाल रंग की रोशनी लगाओ, हल्के रंग के कपड़े पहनो, फैक्ट्री आने-जाने के दौरान मजदूर स्वयं जिम्मेदार है, कम्पनी की कोई जिम्मेदारी नहीं है।"

यूरिस्टन मैटल मजदूर : "प्लॉट 125 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 10-12 मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों में हैल्परों की तनखा 3000, कारीगरों की 3500 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कल्पना फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 35 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये पर इधर ई.एस.आई. व पी.एफ. 3510 रुपये पर काट रहे हैं।"

श्री भिक्षु कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 83-84 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 300 टन की 4 और 150-200 टन की 40 पावर प्रेस हैं। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 120 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में पावर प्रेसें चलाते हैं। हाथ कटते रहते हैं। ठेकेदार के पहुँचने तक हाथ कटे मजदूर फैक्ट्री में छटपटाते हैं। कार्ड बना कर ठेकेदार ई. एस.आई. भेजता है और फिर हाथ कटे मजदूर श्री भिक्षु फैक्ट्री से बाहर कर दिये जाते हैं। कम्पनी ने टूल रूम के 35 और पैकिंग विभाग के 60 मजदूर स्वयं भर्ती किये हैं। ई.एस.आई. व पी. एफ. अब 3510 पर काटते हैं लेकिन हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 2800 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कोई छुट्टी नहीं – वर्ष में 365 दिन श्री भिक्षु फैक्ट्री में उत्पादन होता है। पीने के खारे पानी ने मजदूरों को उदर रोगी बना रखा है। दो साल से सीवर का ढक्कन टूटा पड़ा है – श्री भिक्षु फैक्ट्री हर समय बदबू से भरी रहती है।"

बॉक्स एण्ड कार्टन वरकर : " 16/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ करते 40-50 मजदूरों को रात 8 बजे और 50-60 को रात 12½ बजे छोड़ते हैं। आठ के बाद वालों को 14 रुपये रोटी के। ओवर टाइम के पैसे सब को सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. मजदूरों में 30-35 के ही और इन से जुलाई से 3510 व 3640 पर हस्ताक्षर करवाते हैं जबकि हैल्परों की तनखा 2000-2200 तथा ऑपरेटरों की 2400-3700 रुपये है। फैक्ट्री में लैट्रीन सिर्फ डायरेक्टर के लिये है, मजदूर बाहर रेल लाइनों पर जायें।"

नवरंग प्रोसेसर्स मजदूर : "प्लॉट डी 47 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में 65 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-12 के ही। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 2400 और कारीगरों को 3400-3500 रुपये।"

कास्टमास्टर वरकर : "प्लॉट 46 व 64 सैक्टर-6 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। इधर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. 3510 पर काटते हैं लेकिन हैल्परों की तनखा 2554 रुपये है।"

शंकरा फैब मजदूर : "प्लॉट 96 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस.आई. व पी एफ. 25 के ही हैं। ऑपरेटरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3000 रुपये। तनखा देरी से – सितम्बर का वेतन आज 19 अक्टूबर तक नहीं दिया है।"

ए.पी. प्रोसेस वरकर : "प्लॉट 103 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई करते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, महीने के हर दिन काम। आठ घण्टे के 100 रुपये अनुसार वेतन। तनखा देरी से – अगस्त की 25 सितम्बर को दी थी, सितम्बर की आज 12 अक्टूबर तक नहीं।"

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ●*प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.07.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये); अर्धकुशल अ 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); अर्धकुशल ब 3770 रुपये (8 घण्टे के 145 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये (8 घण्टे के 155 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये (8 घण्टे के 160रुपये) । कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।*

सुपर ऑटो मजदूर : "प्लॉट 84 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 200 वरकर सुबह 8½ से रात 9 बजे तक रोज काम करते हैं, रात 11-12 तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। नब्बे प्रतिशत मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं और अधिकतर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। हैल्परों की तनखा 2000-2200 और ऑपरेटरों की 2600 रुपये।" **भुवनेश्वरी प्रिन्टर्स वरकर :** "प्लॉट 10 व 13 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 70-75 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 4-5 के ही। रात को दो मशीन ही चलती हैं, अधिकतर मजदूर सुबह 8½ से रात 9 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हस्ताक्षर करवाते समय राशि नहीं भरी होती, हैल्परों की तनखा 2000 और ऑपरेटरों की 2500-3500 रुपये। पैसे देते समय हर महीने चेहरा देख कर 100-300 रुपये की गड़बड़ करते हैं। फैक्ट्री में मामूली उपचार का प्रबन्ध भी नहीं है।" **सुडट्रैक लिन्केज मजदूर :** "बुढिया नाले के पास स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2200 और कारीगरों की 2800-3000 रुपये।" **सरफेसर एण्ड फिनिशर मजदूर :** "प्लॉट 118 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. व पी.एफ. 7 महीने काटते हैं और फिर 5 महीने नहीं काटते। इस प्रकार 5-6 साल से लगातार काम कर रहे वरकर कैजुअल हैं। हैल्परों की तनखा 2554 रुपये।" **परफैक्ट पैक वरकर :** "प्लॉट 134 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 70 स्थाई, 330 कैजुअल तथा तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 800 मजदूर काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों की तनखा 2000 और कैजुअलों की 2200-2500 रुपये।" **क्युअरवेल मजदूर :** "प्लॉट 2 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में अगस्त की तनखा 22 सितम्बर को दी। सितम्बर का वेतन आज 19 अक्टूबर तक नहीं।" **रुबिकोन इन्डस्ट्रीज वरकर :** "प्लॉट 97 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1900 और कारीगरों की 2200 रुपये।"

सुपर ऑटो इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 9 जे सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2200-2500 और ऑपरेटरों की 2800-2900 रुपये।" **पी एस आर ऑटो वरकर :** "प्लॉट 51 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 2200 और ऑपरेटर की 3000 रुपये।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 7 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 40 वरकरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3400 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" **बेलमोन्ट रबड़ वरकर :** "58 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों की तनखा 2800-2900 रुपये। प्रदूषण बहुत ज्यादा है – छत पर एग्जास्ट लगाने से कोई फर्क नहीं पड़ा है।" **आर के फोरजिंग मजदूर :** "प्लॉट 49 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2700 और ऑपरेटरों की 3000-4000 रुपये।" **पूजा मैटल वरकर :** "प्लॉट 104 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में चार ठेकेदारों के जरिये रखे 175 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 1800 और ऑपरेटरों की 2100-2200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" **नेशनल इंजिनियरिंग मजदूर :** "प्लॉट 101 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1800-2000 और कारीगरों की 2200-2400 रुपये।" **प्रभा उद्योग वरकर :** "प्लॉट 43 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है। हैल्परों की तनखा 2100-2200 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं।"

विश्वकर्मा उद्योग मजदूर : "15 नीलम-बाटा रोड़ स्थित कार्यस्थल पर 50 महिला तथा 20 पुरुष वरकर सुबह 8½ से रात 8½ तक काम करते हैं। सब को रात 12 बजे तक भी रोक लेते हैं। तनखा 1600-2200 रुपये और ओवर टाइम सिंगल रेट से। यहाँ पैरामाउन्ट पोलीमर्स से माल आता है और फिनिशिंग तथा पैकिंग के बाद एल जी, सैमसंग, व्हर्लपूल को भेजा जाता है।"

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

गुड़गाँव से ..... (पेज चार का शेष)

में 500 वरकर सुबह 9 से रात 7½ तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2410 और कारीगरों की 2600-2650 रुपये।" **सेक्युरिटी गार्ड :** "उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 152 व 210, फेज-3 में प्लॉट 540, फेज-4 में प्लॉट 224 स्थित **सरगम** कम्पनी की फैक्ट्रियों में गार्डों की तनखा 2554 रुपये।" **मैक एक्सपोर्ट वरकर :** "प्लॉट 143 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते।" **ग्राफ्टी एक्सपोर्ट मजदूर :** "प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 8 की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर हैल्परों को सितम्बर के 3510 रुपये दिये।" **सूरी इम्पैक्स वरकर :** "प्लॉट 211 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2300 और कारीगरों की 3000 रुपये। सितम्बर का वेतन आज 15 अक्टूबर तक नहीं दिया है। गाली तो साहब के मुँह पर रहती है।" **बी एण्ड एस इन्टरनेशनल,** 301 फेज-2, हैल्पर की तनखा 2300 रुपये, अगस्त का वेतन 28 सितम्बर को दिया और सितम्बर का 15 अक्टूबर तक नहीं; **नीति क्लोथिंग,** 218 फेज-1, हैल्पर, चैकर, लेयरमैन से 7 अक्टूबर को 3510 रुपये पर हस्ताक्षर करवाये पर 15 अक्टूबर तक नहीं दिये, यह 3510 भी 10 घण्टे ड्युटी पर कर, सितम्बर के ओवर टाइम के घण्टे काट कर; **सान इन्टरनेशनल,** 330 फेज-2, हैल्पर तनखा 2554 रुपये और कारीगर को 8 घण्टे के 120 रुपये, नौकरी छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते; **साइन इम्पैक्स,** 254 फेज-1, शिफ्ट 13 घण्टे की, ओवर टाइम 4 घण्टे सिंगल रेट से, हैल्पर तनखा 2554 रुपये और कारीगर को 8 घण्टे के 110-115 रुपये; **आर.एल. खन्ना एक्सपोर्ट,** 289 फेज-2, हैल्पर तनखा 2200-2600 और कारीगर की 3000 रुपये; **प्रिमियम मोल्डिंग,** 185 फेज-1, 250 स्थाई व 250 कैजुअल वरकर, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम भुगतान मात्र 6 रुपये प्रतिघण्टा, कैजुअलों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, हैल्पर तनखा 2400 और ऑपरेटर की 3000-3500 रुपये; **कृष्णा लेबल,** 162 फेज-1, 9½ घण्टे की ड्युटी पर सितम्बर के 3510 रुपये दिये; **गौरव इन्टरनेश्नल,** 225 फेज-1, कम्पनी हैल्पर तनखा सितम्बर की 3510 रुपये, ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूरों को 2554 रुपये; **तहरसा एक्सपोर्ट,** 174 फेज-1, सुबह 9 से रात 8½ की शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से, हैल्पर तनखा 2200 और कारीगर की 3000 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं; **मोडलामा,** 105 व 106 फेज-1 में सितम्बर की तनखा 3510 व 3640 रुपये, जुलाई व अगस्त का एरियर नहीं, परसनल विभाग द्वारा गाली.... 201 फेज-1 में सितम्बर की तनखा हैल्पर की 2554 और प्रेसमैन की 2700 रुपये, सुबह 9½ से रात 8 की शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से, रविवार को 8 घण्टे के सिंगल रेट से।

शिक्षण वेतन

मैं मजदूर समाचार पढ रही थी। मैं यह खबर पढ कर हैरान रह गई कि हरियाणा सरकार ने एक हैल्पर (अकुशल श्रमिक) की कम से कम मासिक तनखा 8 घण्टे प्रतिदिन काम करने तथा सप्ताह में एक छुट्टी के साथ 3510 रुपये रखी है। यह बात हैरानीजनक है क्योंकि स्कूलों में प्रशिक्षित टीचरों को इतनी तनखा नहीं दी जा रही।

मैंने और मेरे जैसी कई लड़कियों ने अध्यापन के लिये एन टी टी तथा ई सी सी ई द्वारा प्रशिक्षण लिया है। इन प्रशिक्षणों पर काफी पैसे खर्च करने के बावजूद विद्यालयों में 800, 1000, 1500, 2000, 2500 रुपये से ज्यादा वेतन नहीं देते। ढाई हजार रुपये तनखा तो तब देते हैं जब स्नातक की शिक्षा पूरी कर ली हो और पढाने का अनुभव भी हो।

मैं और मेरी सहेलियाँ कई विद्यालयों में गई हैं। स्कूलों में सुबह 6½से दोपहर 2½ बजे तक 8 घण्टे पूरा काम लेते हैं। कक्षा में पढाने के अलावा भी कई काम होते हैं। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक तथा मास्टर रजिस्टर भरने के काम घर ले जा कर करने पड़ते हैं। इस सब के बावजूद तनखा 2000 रुपये से ज्यादा नहीं। पर यह सब तो बड़े स्कूलों की बातें हैं। अब इन विद्यालयों को देखिये : 1. **इरोस कॉनवेन्ट स्कूल,** एन एच-3 में डी.ए.वी. कॉलेज के पास, में सुबह 7 से दोपहर 1 बजे तक पढाने की तनखा 1000 रुपये। 2. **एम.डी. कॉनवेन्ट स्कूल,** एन एच-5 मेन मार्केट, में सुबह 7 से दोपहर 2 बजे तक पढाने का वेतन 600 रुपये। 3. **लिटिल चाइल्ड स्कूल,** एन एच-5 एफ ब्लॉक, में सुबह 8 से दोपहर 1 बजे तक अध्यापन पर तनखा 500 रुपये। 4. **परमार पब्लिक स्कूल,** सोहना रोड़, में सुबह 7 से दोपहर 3 बजे तक पढाने की तनखा 1800 रुपये।

गुड़गाँव से -

लोगवैल फोर्ज मजदूर : "प्लॉट 116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री से ठेकेदार को हटा कर कम्पनी ने सब वरकरों को स्वयं रख लिया है। अगस्त की तनखा ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को 2400-2800 रुपये दी थी। सितम्बर की तनखा सब हैल्परों को 3510 रुपये दी है।"

धीर इन्टरनेशनल वरकर : " प्लॉट 299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में मैं, रामनारायण, धुलाई विभाग में छत से गिर कर बेहोश हुआ। कम्पनी मुझे डुण्डाहेड़ा में एक निजी चिकित्सालय ले गई। डॉक्टर ने कमर में चोट के लिये दो महीने बिस्तर पर आराम का निर्देश दिया। दो महीने बाद पूरी तरह ठीक नहीं हुआ तो कम्पनी बोली कि खुद इलाज करवाओ। मैंने श्रम विभाग में शिकायत की। तीन तारीखों पर कम्पनी उपस्थित नहीं हुई। फिरा 11 अक्टूबर को हाजिर हो कर माना कि मैं फैक्ट्री में गिरा था। उपचार करवाने और तनखा देने का समझौता हुआ। मैं 12 अक्टूबर को फैक्ट्री गया तो कम्पनी अधिकारियों ने मुझे गाली दी, जबरन दो वाउचरों पर हस्ताक्षर करवाये और 2200 रुपये दिये। मैं पुलिस के पास गया। श्रम विभाग में फिर जाऊँगा।"

अलंकार मजदूर : "410 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 7½ की एक शिफ्ट है। हैल्परों को 10½ घण्टे ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये।"

एस के फैब्रिक वरकर : "13 सी उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2150 और कारीगरों की 2400-2500 रुपये।"

स्पार्क मजदूर : "प्लॉट 166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 300 कैजुअल तथा तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 350 वरकर काम करते हैं। ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हैल्परों को अगस्त की तनखा 3510 रुपये दी। सितम्बर का वेतन आज 15 अक्टूबर तक नहीं दिया है। सुबह 9½ से रात 8 तक तो रोकते ही हैं, रात पौने दो बजे तक रोक लेते हैं। कोई छुट्टी नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। पौने दो तक रोकते हैं तब भोजन के 25 रुपये देते हैं। मात्र दो लैट्रीन हैं जिनमें एक महिला मजदूरों के लिये है।"

रोलैक्स ऑटो वरकर : "प्लॉट 303 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2460 रुपये और ऑपरेटरों की 2800-3500 रुपये। सितम्बर का वेतन आज 15 अक्टूबर तक नहीं दिया है।" **(बाकी पेज तीन पर)**

मेघा एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 488 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री

दरारें और कोशिशें

टाटा रायरसन स्टील मजदूर : " 33 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हम 104 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते थे और 25 रुपये प्रति कार्यदिवस भोजन के देते थे। हरियाणा सरकार द्वारा जुलाई से लागू न्यूनतम वेतन कम्पनी ने अगस्त से लागू किया तब हैल्पर व ऑपरेटर, दोनों को ही 3510 रुपये तनखा दी और..... और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की जगह सिंगल रेट से किया तथा भोजन के 25 रुपये बन्द कर दिये, तनखा से भोजन के 650 रुपये काट लिये।

"10 सितम्बर को यह तनखा लेने के बाद रात को हम ने काम बन्द कर दिया। साहब लोग रात 8½-9 बजे फैक्ट्री पहुँचे और बोले कि काम करो, ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से देंगे। लेकिन हम ने दोनों शिफ्टों के मजदूरों के एकत्र होने के लिये 11 सितम्बर की सुबह 9½-10 तक काम बन्द रखा। कम्पनी ने तनखा से काटे भोजन के 650 रुपये 11 सितम्बर को दिये। लेकिन बाद में साहब लोग ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से फिर करने की अपनी बात से मुकर गये हैं। सितम्बर की तनखा आज 11 अक्टूबर तक नहीं दी है -- कहते हैं तनखा बनाने वाला छुट्टी गया है। प्लान्ट मैनेजर बहुत बुरी तरह डाँटता है।"

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 47-48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 8 सफाई कर्मियों ने 3510 रुपये से कम तनखा लेने से इनकार कर 7-8 सितम्बर को काम बन्द किया तब ठेकेदार ने आश्वासन से बात बना ली थी। इधर पहली अक्टूबर को सफाई कर्मियों ने सितम्बर की तनखा 3510 ली। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये हम मजदूरों ने सफाई कर्मियों के रास्ते पर चलना तय किया अगर ..... कम्पनी ने 13 अक्टूबर को हमें सितम्बर की तनखा 3640 रुपये दी। उत्पादन कार्य में लगे ठेकेदारों के जरिये रखे 400 से ज्यादा वरकरों को सितम्बर की तनखा आज 17 अक्टूबर तक नहीं दी है ..... वे भी आपस में सफाई कर्मियों की बातें कर रहे हैं। फैक्ट्री में 800 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सिर्फ 9 लैट्रीन थी, मैनेजमेन्ट ने 5 तुड़वा दी, अब मात्र 4 हैं।"

इन्डीकेशन इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 19 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों को हरियाणा सरकार द्वारा जुलाई से लागू न्यूनतम वेतन कम्पनी यह कह कर नहीं दे रही थी कि न्यायालय का स्थगन आदेश है। अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से हमें पता चला कि किसी अदालत की कोई रोक नहीं है। कई कम्पनियों में वरकरों ने नये न्यूनतम वेतन लागू करवाये। हमें अगस्त की तनखा भी पुरानी दर से दी तो 13 सितम्बर को सुबह हम कैजुअल वरकर फैक्ट्री के अन्दर जाने की बजाय गेट पर रुक गये। स्थाई मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये पर हम कैजुअल वरकरों के बिना उत्पादन नहीं हो सकता क्योंकि हम मजदूरों का अस्सी प्रतिशत हैं। हमें अन्दर ले जाने यूनियन नेता गेट पर आये पर हम ने इनकार कर दिया (यूनियन के सदस्य स्थाई मजदूर ही हैं)। फिर एक मैनेजमेन्ट सदस्य ने गेट पर आ कर भोंपू से घोषणा की कि ओवर टाइम के पैसों के संग 16 सितम्बर को नये ग्रेड अनुसार पैसे दे देंगे। डेढ घण्टे फैक्ट्री से बाहर रह कर हम अन्दर गये। साहब की 16 तारीख की बात धरी रह गई तो उन्होंने 22 सितम्बर की कही.... दबाव बनाये रख कर हम ने तनखा 3510 रुपये ली है और एरियर भी।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 21 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 वरकर कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये थे। सितम्बर की तनखा हमें 3640 रुपये दी और जुलाई व अगस्त का एरियर भी दिया। फिर कम्पनी ने ठेकेदारों को जरिया बनाने के लिये पैकिंग विभाग पर हाथ डाला। बीस कैजुअल वरकरों को ठेकेदार के बना कर 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3400 रुपये देने की बात की। बीस के बीस ने नौकरी छोड़ दी। चार हजार रुपये की कह कर नये लोग लाये गये हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73